अजस्र ऊर्जा का स्रोत है यौवन

इस समय विश्व में लगभग दो अरब की आबादी १८ से ३५ साल के बीच के युवाओं की है। इनमें से करीब ३५ करोड़ की संख्या भारत की युवा आबादी की है। स्वाभाविक है कि ये युवा समूची जनसंख्या की रीढ़ हैं और इन्हें ही व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक से लेकर राष्ट्रीय व वैश्विक चुनौतियों का सर्वाधिक सामना करना है। जिंदगी की भागमभाग और अनेकमुखी प्रतियोगिताओं की गलाकाट होड़ में कई बार चुनौतियाँ इतना दीर्घ घातक और मारक रूप ले लेती हैं कि युवकों का यौवन कहाँ खो जाता है - पता नहीं चलता। जब ठहराव मिलता है, तब तक यौवन चला जाता है। शिक्षा-दीक्षा दिशाहीनता, रोजगार-कैरियर के दबाव, उच्छृंखल प्रवृत्ति के विस्तार तथा संघर्षशक्ति के ह्रास की वजह से आधुनिक युवा और उनका यौवन संकटग्रस्त है। शारीरिक शक्ति, मानसिक तेज, नैतिक बल, शौर्य शक्ति, नवाचार आदि धीरे-धीरे क्षुद्रता, लोलुपता, संकीर्णता, विध्वंसकता से सराबोर होते जा रहे हैं। फलस्वरूप, इस विशाल अजस्र उर्जा शक्ति का इनके अपने उन्नयन में और संपूर्ण मानवीय प्रकृति के उन्नयन में समुचित उपयोग बहुत कम हो पाता है। यद्यपि आधुनिक सभ्यता के प्रगति-पथ में अनगिनत चिह्न दिखाई देते हैं, जहाँ नवान्वेषण की सारी निशानियाँ भी दिखती हैं, किंतु स्वस्थ, सुंदर, आत्मचेता यौवन का ऊर्जस्वित उछाह दृष्टिगोचर नहीं देता, जिसे देखकर सुमित्रानंदन पंत की तरह कहा जा सके कि 'सुंदर है विहग, सुमन सुंदर/मानव तुम सबसे सुंदरतम।' बनावटीपन व स्वांग से भरपूर यौवन भ्रमजालों की एक आभासी व छद्म संस्कृति बनाते-बनाते स्वयं उसका सबसे अधिक शिकार हुआ है। सभ्यता के अंतराल में बाह्य विकास के बावजूद आंतरिक घुटन, अवसाद, तुनकमिजाजी से घिरे हजारों होनहार युवा हर साल आत्महत्या करके असमय काल कवलित हो जाते हैं और चतुर्दिक एक नकारात्मक वाइब्रेशन बना जाते हैं। भौतिक समृद्धि और आत्मिक दारिद्र्य के इस कशमकश में यौवन नष्ट हो रहा है। जब यौवन ही समस्याग्रस्त होकर खत्म होगा, तो फिर पूरी जिंदगी कैसे ठीक होगी? इसीलिए कभी टी. एस. इलियट द्वारा उठाया गया काव्यात्मक संवाद बड़ा सार्थक लगता है कि 'वह जीवन कहाँ है, जिसे जीने की कोशिश व ललक में खो दिया गया?'

जीवन एक अविभाज्य इकाई है, यह बात महात्मा गांधी ने भी कही थी। ऐसे में जीवन के सभी पड़ावों शैशव, कैशौर्य, जवानी और बुढ़ापा का अपना सौंदर्यपूर्ण महत्त्व है। शैशव है, तभी यौवन-जवानी आती है और जवानी है तो बुढ़ापा भी आएगा। जीवन प्रकृति की सर्वोत्कृष्ट देन है और इस जीवन में यौवन अनुपम उपहार। जीवन सुंदर है, क्योंकि इसमें यौवन है। इसकी उपस्थिति के कारण बाकी सारी अवस्थाएँ सार्थक लगती हैं। यह ठीक है कि जीवन की जवानी का सर्वाधिक महत्त्व है, पर यह आगे की वृद्धावस्था के बिना अधूरा है। आखिर कौन चाहेगा कि जवानी में ही अवसान हो जाए; कविता में कहने की अदा अलग होती है -'इससे पहले/कि हो जाएँ हाशिया/अप्रासंगिक और निरर्थक/कवि, कौन नहीं चाहेगा/हो जाए विदाई/इस दुनिया से टाटा टाटा बाई।'-(अशोक चन्द्र) खैर, जब जवानी का मरण वरेण्य नहीं, तो बुढ़ापा का स्वागत करना ही होगा। यह हो नहीं सकता कि उम्र बढ़े और उसका असर न दिखे। जिनकी उम्र काफी लंबी होती है, उनके भी

यौवन-जवानी के दिन ज्यादा नहीं होते, वृद्धावस्था के ही दिन अधिक होते हैं। शायद इस कारण भी जिन लोगों ने भी बहुत अधिक आयु पाई, वे अपने जीवन से बुरी तरह ऊबने-ऊँघने लगे - चाहे इच्छामृत्यु का वरदान पाए भीष्म पितामह हों या अमर्त्य अश्वत्थामा। समय पर मृत्यु न होने पर जीवन भार सदृश सौंदर्यहीन बन जाता है। मृत्यु अनिवार्य न हो, तो पूरा जीवन-संसार ऐसा नरक बन जाएगा, जिससे बदतर कोई काल्पनिक या वास्तविक नरक नहीं हो सकता।

समय बीतने, दूसरों शब्दों में आयु बढ़ने का असर सजीव-निर्जीव, जड़-चेतन सभी वस्तुओं पर पड़ता है। सिर्फ अलौकिक शक्तियों के अमर के साथ अजर रहने के किस्से बहुश्रुत हैं। पौराणिक पात्रों परशुराम, हनुमान, विभीषण, जामवंत, बलि, व्यास, अश्वत्थामा, कृपाचार्य आदि के बहुत दिन तक पृथ्वी पर रहने का उल्लेख है -'अश्वत्थामा बलिर्व्यासो हनुमाश्च विभीषणः, कृपः परशुरामश्च सप्ततै चिरंजीविनः।' तुलसी कृत रामायण में उल्लिखित है कि हनुमान को अजर-अमर होने का वरदान श्रीराम का संदेश लंका की अशोक वाटिका में लाने के एवज में सीताजी ने भी दिया था -'आसिष दीन्ह रामप्रिय जाना। होहु तात बल सील निधाना।।अजर अमर गुननिधि सुत होहू। करहूँ बहुत रधुनायक छोहू।।' स्वर्ग के बारे में कहा जाता है कि वहाँ पहुँच जाने के बाद प्राणिमात्र पर समय के बीतने का असर नहीं होता। प्रश्न उठता है कि क्या व्यक्ति मरने के वक्त की आयु व रूप-सौंदर्य में जितना स्वस्थ लग सकता है, स्वर्ग में जाने के उपरांत उसी पर ठहर कर रह जाता है, या फिर उसका यह रूपाकार रहता ही नहीं? अंग्रेजी में भी एक कहावत मशहूर है कि 'ईश्वर जिन्हें प्यार करता है, उन्हें जवानी में ही उठा लेता है।' अस्तु, जड़-चेतन जितनी भी चीजें है, सबकी विकासात्मक और प्राकृतिक समाप्ति से पहले जरावस्था आती ही है।

जरा-जर्जरावस्था से ठीक पहले जवानी का प्रचंड वेग रहता है। यौवन के लिए आयु और वृत्ति-गुण दोनों का तालमेल आवश्यक है। तन के साथ मन का जवान होना भी जरूरी है। उम्र का यौवन पहली नजर में ही दिख जाता है, यह रूप-रंग, चाल-ढाल, आवाज आदि से भी छलकता है, जबकि मन, स्वभाव, गुण का यौवन कभी दृश्य तो कभी अदृश्य होता रहता है। शारीरिक सौष्ठव, सौंदर्य, उत्साह-उमंग, जोश-जज्बा, तेजस्विता, स्फूर्ति, आरोग्य, ऊर्जिस्वता, सृजनात्मकता, प्रसन्नता आदि का समन्वित नाम यौवन है। इसी कसौटी पर युवा होने के लिहाज से उम्र कम-ज्यादा ही क्यों न हो, पर जहाँ ये सब लक्षण सामने होते हैं, वहाँ यौवन परिलक्षित होता है। कई बार इसकी तीव्र तरंगें बुद्धि-विवेक के नियंत्रण में नहीं रह पातीं। लोग कहते भी हैं -'लगा दो आग पानी में जवानी उसे कहते हैं।' राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' ने यौवन के इसी उफान को अभिव्यंजित किया है -

यौवन के उच्छल प्रवाह को, देख मौन, मन मारे,
सहमी हुई बुद्धि रहती है निश्चल खड़ी किनारे।
हिम-विमुक्त, निर्विघ्न, तपस्या पर खिलता यौवन है
नयी दीप्ति, नूतन सौरभ से रहता भरा भुवन है।

लगता है, कुछ इस कारण से भी राजनीतिक दल अपनी युवा-शाखा के सदस्यों के लिए अधिकतम आयु अपने संविधान में प्रायः पैंतीस वर्ष तो रखते हैं, लेकिन राजनीति में संजीदगी व परिपक्वता की मांग को परखकर युवा मोर्चे के पदाधिकारी खासकर अध्यक्ष आदि चालीस-पैंतालीस की उम्र वालों को बनाते हैं!

यह समझना आसान नहीं है कि अपने संविधान को पार्टियों द्वारा अपने स्तर पर ही लागू न कर पाने के पीछे दूसरी क्या मजबूरी है और जो व्यावहारिक रूप से प्रचलन में है, उसे संवैधानिक जामा पहनाने में क्या दिक्कत है? इसे गजलकार दुष्यंत कुमार ने अपने ढंग से समझाया है –'तू न समझेगा सियासत, तू अभी इनसान है।' राजनीतिक हलकों में चालीस-पैंतालीस-पचास तक के उम्रवालों की गिनती युवा नेताओं में होती है। वृद्ध हो चुके, पर काम में चुस्त-दुरुस्त पंडित जवाहर लाल नेहरू के लिए तब आधुनिक कवि शिवमंगल सिंह 'सुमन' ने लिखा था –

तुम बूढ़े हो चले? जवानी जिस पर होती रहीनिछावर।
तुम बूढ़े हो चले? राष्ट्र की धड़कन जिन साँसों परनिर्भर।
तुम बूढ़े, जिनके कंधों पर चालीस कोटि जनों की आशा।
तुम बूढ़े तो हमें बदलनी होगी, यौवन की परिभाषा।

कहने की जरूरत नहीं कि अपने वर्तमान प्रधानमंत्री के बारे में बहुत सारे लोग इसी प्रकार तरह-तरह के राय-विचार व्यक्त करते रहते हैं। निस्संदेह, जैसे सोलह साल का किशोर युवा नहीं होता, वैसे ही चालीस-पैंतालीस साल का व्यक्ति जवान तो होता है, पर युवा नहीं रहता। फिर भी स्थिति चाहे कैसी भी हो और उम्र चाहे कितनी ही हो, समस्याओं व चुनौतियों से अविचल भाव से जूझते हुए रास्ता बनाना और सही इरादे से सही रास्ते पर चलते हुए अपने व्यापक लक्ष्य को अर्जित करना अथक प्रौढ़मन की ही पहचान है, जहाँ पूरा जीवन एक लय बन जाता है। समय के साथ युवक जवान से वृद्ध होते जाते हैं, पर धरती पर कभी यौवन का अकाल नहीं पड़ता। इनकी संख्या कम-ज्यादा तो होती है, पर नवीनता, ताजगी, ऊर्जिस्वता, मादकता सदैव छाई रहती है। वस्तुतः यौवन शाश्वत ऊर्जा-प्रवाह है, जो उम्र के साथ रहकर भी उम्र के बंधन से परे अनेक रूपों में गतिशील रहता है। युवा उम्र और यौवन भाव के इन्हीं अंतर्संबंधों को श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने भी काव्यबद्ध किया है –

किसने ऐसा दूध पिया जो रोके गति तूफानी,
यह जीवन का ज्वार, चली उफनाती प्रखर जवानी।
युवक हार जाते हैं लेकिन यौवन कभी नहीं हारा,
एक निमिष की बात नहीं है चिर संघर्ष हमारा।

बहरहाल, युवा-आयु और भाव के अतिरिक्त पारिवारिक स्थितियाँ, सामाजिक जटिलताएँ और कठोर वास्तविकताएँ जीवन के यौवन की दशा और दिशा अधिक नियत करती हैं। भ्रष्ट, कुत्सित, अकर्मण्य, द्वेषपूर्ण व दुराग्रही कटु यथार्थ के बीच बेरोजगारी, निर्धनता, रुग्णता, अशिक्षा से त्रस्त युवा न तो उम्र की उन्मुक्तता का आनंद उठा पाता है और न ही उसके मन-मस्तिष्क तथा दिल में यौवन भाव का सहज बोध व प्रस्फुटन हो पाता है। असमय यानी समय से पहले उसका मन-शरीर वृद्ध लगने लगता है। लेकिन तमाम संकटों से आच्छन्न व्यक्ति-समाज में आखिरकार युवाओं से ही अपेक्षा भी की जाती है कि वे नव्यतम अच्छाइयों के संवाहक बनकर स्वयं की और पूरे विश्व समाज की नियति निर्मित करें।